6. निम्नलिखित में से किन्हीं एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) संस्मरण

(ख) झूरी का चरित्र-चित्रण

[This question paper contains 8 printed pages.]

20.12.2023 (E)

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक............

Maitreyi College LIBRARY Chanakya Puri, New Delhi

munotes.in

Sr. No. of Question Paper : 2831 **G**

Unique Paper Code : 2055092003

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8+8+8=24)

(क) झूरी के पास दो बैल थे- हीरा और मोती। देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय किया करते थे। एक-दूसरे के मन की बात को कैसे समझा जाता है, हम कह नहीं सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोनों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफसी, कुछ हल्की-सी रहती है, फिर जियादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

अथवा

अथवा

'बहादुर' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'घर जोड़ने की माया' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'सच्ची वीरता' निबंध की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

5. 'मंगर' बेनीपुरी जी का जीता-जागता शब्दचित्र है-इसका युक्ति संगत उत्तर दें। (15)

अथवा

महादेवी वर्मा कृत 'रामा' की मूल संवेदना लिखिए।

munotes.in

अथवा

बच्चों से उसकी वितृष्णा क्यों हुई? शायद इसीलिए तो नहीं कि उसे जो एक भी बच्चा नसीब न हुआ, वह कमाऊ पूत बनने के पहले ही, उसे दगा देकर चल बसा और जो उसकी एक बच्ची भी, सो, लूलीय जिसकी शादी में उसने इतनी दरियादिली दिखाई, लेकिन, एक बार मुसीबत काटने उसके दरवाजे पहुँचा, तो दामाद ने ऐसी बेरुखी दिखलाई कि मंगर का स्वाभिमान उसे वहां से जबरदस्ती भगा लाया।

2. कहानी का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

निबंध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (15)

धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सबेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नजर आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी - अरे रीछ-बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अंगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनाने की भी जिद्द करता, पर निर्मला स्वयं सब्जी और रोटी बनाती। निर्मला की उसको बहुत फिक्र रहती थी। उसकी उन दिनों तबीयत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए वह कुछ दवा ले रही थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था - 'माता जी, मेहनत न करो, तकलीफ बड़ जाएगा'। वह कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भालू की तरह दौड़ता हुआ कमरे में

munotes.in

जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने-लाकर रख देता। जब मैं शाम को दफ्तर से आता तो घर के सभी लोग मेरे पास आकर दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे।

(ख) सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वे कभी चंचल नहीं होते। रामायण में वाल्मीकि जी ने कुंभकर्ण की गाढ़ी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरों की नींद आसानी से नहीं खुलती।

munotes.in

अथवा

कबीरपंथ की ही यह हालत हो, ऐसा नहीं है। अनेक महानं धर्म तक जाति-पाँति के ढकोसलों, चूल्हा चाकी के निरर्थक विधानों और मंत्र यंत्र के क्लांतिकर टोटकों में पर्यवसित हो गए हैं। विषय

में कोई बात तक कहना पसंद नहीं किया, परंतु उनका प्रवर्तित विशाल धर्म-मत मंत्र यंत्र में समाप्त हो गया। यह नहीं जनता में धर्म गुरुओं के प्रति श्रद्धा नहीं है। श्रद्धा का अतिरेक ही तो सर्वत्र पाया जाता है। कबीरदास ने अवतारों और पैगंबर शब्दों में निंदा की।

(ग) रामा के संकीर्ण माथे पर की खूब घनी भौहें और छोटी-छोटी स्नेहतरल आंखें कभी-कभी स्मृति-पट पर अंकित हो जाती हैं और कभी धुंधली होते-होते एकदम खो जाती हैं। किसी थके झुंझलाए शिल्पी की अन्तिम भूल जैसी अनगढ़ मोटी नाक, सांस के प्रवाह से फैले हुए-से--नथुने, मुक्त हंसी से भरकर फूले हुए-से ओठ तथा काले पत्थर की प्याली में दही की याद दिलाने वाली सघन और सफेद दन्त-पंक्ति के सम्बन्ध में भी वही सत्य है।